

आदर्श इंटर कॉलेज

सिविल लाइंस, कानपुर

परियोजना कार्य (अर्थशास्त्र)

भारतीय किसान और कृषि

चुनौतियाँ, बदलती तकनीक और आत्मनिर्भरता की राह

प्रस्तुतकर्ता

काजल मौर्य

कक्षा 11 (वाणिज्य)

अनुक्रमांक : 19

मार्गदर्शक

श्री राकेश चंद्र यादव

प्रवक्ता, अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र विभाग · सत्र 2025-26

प्रमाण-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि काजल मौर्य, कक्षा 11 (वाणिज्य), ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 में “भारतीय किसान और कृषि” पर यह परियोजना कार्य पूरी लगन और ईमानदारी से पूर्ण किया है।

यह परियोजना माध्यमिक शिक्षा परिषद् के निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार मेरे मार्गदर्शन में तैयार की गई है। विद्यार्थी ने जानकारी एकत्र करने, सर्वेक्षण करने और निष्कर्ष निकालने में सराहनीय परिश्रम किया है।

श्री राकेश चंद्र यादव

मार्गदर्शक शिक्षक

बाह्य परीक्षक

हस्ताक्षर

श्री हरीश चंद्र पाठक

प्रधानाचार्य

आभार

सबसे पहले मैं अपने मार्गदर्शक श्री राकेश चंद्र यादव के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इस परियोजना के हर चरण में धैर्य के साथ मेरा मार्गदर्शन किया और मेरी छोटी-छोटी शंकाओं का भी समाधान किया।

मैं श्री हरीश चंद्र पाठक, प्रधानाचार्य, आदर्श इंटर कॉलेज, का भी धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने हमें ऐसे उपयोगी मुद्दे पर काम करने का अवसर और आवश्यक सुविधाएँ प्रदान कीं।

मैं अपने गाँव के उन सभी किसान भाइयों-बहनों की हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने खेतों में काम छोड़कर मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए और अपने अनुभव साझा किए।

अंत में मैं अपने माता-पिता और मित्रों को धन्यवाद देती हूँ, जिन्होंने पूरे समय मेरा उत्साह बढ़ाया और सामग्री जुटाने में मेरी सहायता की।

काजल मौर्य

कक्षा 11 (वाणिज्य)

विषय सूची

1. प्रस्तावना.....	6
2. परियोजना के उद्देश्य.....	6
2.1 कार्य-क्षेत्र.....	6
2.2 कार्य-पद्धति.....	6
3. भारतीय कृषि की विशेषताएँ.....	7
3.1 जीविका कृषि.....	7
3.2 मानसून पर निर्भरता.....	7
3.3 फ़सल-चक्र.....	7
4. किसानों की प्रमुख समस्याएँ.....	8
4.1 छोटी और बिखरी जोतें.....	8
4.2 बढ़ती लागत और ऋण.....	8
4.3 उपज का उचित मूल्य न मिलना.....	8
4.4 प्राकृतिक आपदाएँ.....	8
5. आधुनिक कृषि तकनीकें.....	8
5.1 मृदा परीक्षण.....	9
5.2 सूक्ष्म सिंचाई और उन्नत बीज.....	9
5.3 मोबाइल और डिजिटल सेवाएँ.....	9
6. सरकारी योजनाएँ और संस्थाएँ.....	10
7. सर्वेक्षण एवं आँकड़ों का विश्लेषण.....	10
7.1 सर्वेक्षण का विवरण.....	10

7.2 जोत का आकार.....	11
7.3 सिंचाई के साधन.....	11
7.4 प्रमुख समस्याएँ.....	12
7.5 प्रमुख निष्कर्ष.....	12
8. केस अध्ययन.....	12
8.1 केस अध्ययन 1 : सब्जी खेती से बढ़ी आय.....	12
8.2 केस अध्ययन 2 : किसान उत्पादक संगठन.....	13
9. चित्र-संग्रह.....	14
10. सुझाव.....	15
11. निष्कर्ष.....	16
12. संदर्भ सूची.....	16
परिशिष्ट क : सर्वेक्षण प्रश्नावली.....	17

1. प्रस्तावना

भारत को कृषि-प्रधान देश कहा जाता है। आज भी देश की बड़ी जनसंख्या की आजीविका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर है। किसान को “अन्नदाता” कहा जाता है, क्योंकि उसके परिश्रम से ही करोड़ों लोगों का पेट भरता है।

हरित क्रांति के बाद देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बना, परंतु छोटे खेत, मौसम की अनिश्चितता, बढ़ती लागत और उपज का उचित मूल्य न मिलना आज भी किसानों की बड़ी समस्याएँ हैं।

इस परियोजना में भारतीय कृषि की विशेषताओं, किसानों की समस्याओं, सरकारी प्रयासों और नई तकनीकों का अध्ययन किया गया है। साथ ही कानपुर देहात के एक गाँव के 40 किसान परिवारों का सर्वेक्षण भी किया गया है।

2. परियोजना के उद्देश्य

इस परियोजना के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषताओं और फ़सल-चक्र को समझना।
2. किसानों की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं की पहचान करना।
3. सर्वेक्षण द्वारा किसानों की आय, लागत और सिंचाई के साधनों का अध्ययन करना।
4. आधुनिक कृषि तकनीकों और सरकारी योजनाओं की जानकारी एकत्र करना।
5. किसानों की आय बढ़ाने के व्यावहारिक सुझाव देना।

2.1 कार्य-क्षेत्र

सर्वेक्षण कानपुर देहात ज़िले के एक गाँव के 40 किसान परिवारों तक सीमित है, जिनमें सीमांत, लघु और मध्यम — तीनों श्रेणियों के किसान शामिल हैं।

2.2 कार्य-पद्धति

किसानों से प्रश्नावली के आधार पर आमने-सामने बातचीत की गई, क्योंकि अधिकांश किसान लिखित प्रश्नावली भरने में सहज नहीं थे। खेतों, सिंचाई के साधनों और मंडी का प्रत्यक्ष निरीक्षण भी किया गया। आँकड़े नमूना आँकड़े हैं और केवल इस गाँव की स्थिति दर्शाते हैं।

चरण	कार्य	अवधि
1	पाठ्यपुस्तक और संदर्भ सामग्री का अध्ययन	सप्ताह 1
2	प्रश्नावली तैयार करना और गाँव का भ्रमण	सप्ताह 2
3	40 किसान परिवारों का सर्वेक्षण	सप्ताह 3-4
4	मंडी भ्रमण और केस अध्ययन	सप्ताह 5
5	विश्लेषण और रिपोर्ट लेखन	सप्ताह 6

तालिका : परियोजना की कार्य-योजना

3. भारतीय कृषि की विशेषताएँ

भारतीय कृषि की कुछ विशेषताएँ उसे दूसरे देशों की कृषि से अलग बनाती हैं। यहाँ की खेती विविध जलवायु, मिट्टी और परंपराओं से प्रभावित है।

3.1 जीविका कृषि

अधिकांश किसान मुख्य रूप से अपने परिवार के भोजन के लिए खेती करते हैं और बचा हुआ अनाज ही बाज़ार में बेचते हैं। छोटे खेतों के कारण बड़े पैमाने पर व्यावसायिक खेती कठिन होती है।

3.2 मानसून पर निर्भरता

सिंचाई की सुविधाएँ बढ़ने के बावजूद कृषि का बड़ा भाग आज भी वर्षा पर निर्भर है। वर्षा कम या अधिक होने पर उत्पादन सीधे प्रभावित होता है।

3.3 फ़सल-चक्र

भारत में मुख्यतः तीन फ़सल ऋतुएँ हैं, जिनका विवरण नीचे की तालिका में दिया गया है।

ऋतु	बुवाई	कटाई	प्रमुख फ़सलें
खरीफ़	जून-जुलाई	सितंबर-अक्टूबर	धान, मक्का, बाजरा, कपास
रबी	अक्टूबर-नवंबर	मार्च-अप्रैल	गेहूँ, चना, सरसों, जौ

ऋतु	बुवाई	कटाई	प्रमुख फ़सलें
जायद	मार्च	जून	तरबूज, खीरा, मूँग

तालिका : भारत की प्रमुख फ़सल ऋतुएँ

4. किसानों की प्रमुख समस्याएँ

अन्नदाता होते हुए भी किसान अनेक कठिनाइयों से जूझता है। इनमें से कुछ समस्याएँ प्राकृतिक हैं और कुछ व्यवस्था से जुड़ी हैं।

4.1 छोटी और बिखरी जोतें

पीढ़ी-दर-पीढ़ी बँटवारे के कारण खेत छोटे होते गए हैं। छोटे खेतों में मशीनों का उपयोग महँगा पड़ता है और उत्पादन लागत बढ़ जाती है।

4.2 बढ़ती लागत और ऋण

बीज, खाद, कीटनाशक, डीजल और मज़दूरी की लागत हर वर्ष बढ़ रही है। फ़सल खराब होने पर किसान अक्सर साहूकारों से ऊँचे ब्याज पर ऋण लेने को मजबूर होता है।

4.3 उपज का उचित मूल्य न मिलना

कटाई के समय बाज़ार में एक साथ बहुत अधिक उपज आने से भाव गिर जाते हैं। भंडारण की सुविधा न होने के कारण छोटे किसान को तुरंत बेचना पड़ता है। बिचौलियों के कारण उपभोक्ता द्वारा दिए गए मूल्य का छोटा हिस्सा ही किसान तक पहुँचता है।

4.4 प्राकृतिक आपदाएँ

सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि और कीटों का प्रकोप कुछ ही दिनों में महीनों की मेहनत पर पानी फेर देते हैं।

यहाँ चित्र / फोटो लगाएँ

चित्र : गाँव में गेहूँ की कटाई करते किसान (फोटो स्थान)

5. आधुनिक कृषि तकनीकें

विज्ञान और तकनीक की मदद से खेती को अधिक उत्पादक और कम जोखिम वाला बनाया जा सकता है। कई तकनीकें ऐसी हैं जिन्हें छोटे किसान भी अपना सकते हैं।

5.1 मृदा परीक्षण

मिट्टी की जाँच से पता चलता है कि उसमें कौन-से पोषक तत्व कम या अधिक हैं। इसके आधार पर उचित मात्रा में खाद डालने से लागत घटती है और मिट्टी की सेहत बनी रहती है।

5.2 सूक्ष्म सिंचाई और उन्नत बीज

टपक और फव्वारा सिंचाई से पानी की बचत होती है। रोग-प्रतिरोधी और कम समय में पकने वाले उन्नत बीज उत्पादन बढ़ाते हैं।

5.3 मोबाइल और डिजिटल सेवाएँ

आज किसान मोबाइल पर मौसम का पूर्वानुमान, मंडी के भाव और कृषि विशेषज्ञों की सलाह प्राप्त कर सकते हैं। ड्रोन से कीटनाशक छिड़काव जैसी तकनीकें भी धीरे-धीरे गाँवों तक पहुँच रही हैं।

- जैविक और प्राकृतिक खेती
- फ़सल विविधीकरण — फल, सब्जी, फूल
- पशुपालन, मधुमक्खी पालन और मछली पालन जैसी सहायक गतिविधियाँ

ध्यान दें

नई तकनीक तभी लाभदायक है जब किसान को उसका सही प्रशिक्षण मिले। कृषि विज्ञान केंद्र इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

6. सरकारी योजनाएँ और संस्थाएँ

किसानों की सहायता के लिए केंद्र और राज्य सरकारें कई प्रकार की योजनाएँ चलाती हैं। इनमें प्रत्यक्ष आय सहायता, फ़सल बीमा, सस्ता कृषि ऋण, न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद और मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रमुख हैं।

सहकारी समितियाँ और किसान उत्पादक संगठन छोटे किसानों को मिलकर बीज-खाद खरीदने और उपज बेचने में मदद करते हैं, जिससे उनकी मोलभाव की शक्ति बढ़ती है।

सहायता का प्रकार	उद्देश्य
प्रत्यक्ष आय सहायता	खेती के खर्चों में आर्थिक मदद
फ़सल बीमा	प्राकृतिक आपदा से हुई हानि की भरपाई
किसान क्रेडिट कार्ड	कम ब्याज पर अल्पकालिक ऋण
न्यूनतम समर्थन मूल्य	उपज का न्यूनतम मूल्य सुनिश्चित करना
मृदा स्वास्थ्य कार्ड	मिट्टी की जाँच और खाद की सलाह

तालिका : किसानों को उपलब्ध सहायता के प्रकार

7. सर्वेक्षण एवं आँकड़ों का विश्लेषण

गाँव के 40 किसान परिवारों से उनकी जोत, सिंचाई के साधन, आय के स्रोत और प्रमुख समस्याओं के बारे में बातचीत की गई।

7.1 सर्वेक्षण का विवरण

क्षेत्र	कानपुर देहात ज़िले का एक गाँव
नमूना आकार	40 किसान परिवार

अवधि	नवंबर 2025
विधि	साक्षात्कार और प्रत्यक्ष निरीक्षण

7.2 जोत का आकार

श्रेणी	जोत	किसान	प्रतिशत
सीमांत	1 हेक्टेयर से कम	22	55%
लघु	1-2 हेक्टेयर	12	30%
मध्यम	2-4 हेक्टेयर	5	12.5%
बड़े	4 हेक्टेयर से अधिक	1	2.5%

तालिका : जोत के आकार के अनुसार किसान (नमूना आँकड़े)

गाँव के आधे से अधिक किसान सीमांत श्रेणी में आते हैं। छोटी जोत के कारण उनकी आय सीमित है और वे मज़दूरी जैसे दूसरे कामों पर भी निर्भर हैं।

7.3 सिंचाई के साधन

साधन	किसान	प्रतिशत
निजी नलकूप	17	42.5%
नहर	11	27.5%
किराये का पंप / साझा नलकूप	8	20%
केवल वर्षा	4	10%

तालिका : सिंचाई के मुख्य साधन (नमूना आँकड़े)

अधिकांश किसान भूजल पर निर्भर हैं। केवल वर्षा पर निर्भर किसानों का उत्पादन सबसे अस्थिर पाया गया।

7.4 प्रमुख समस्याएँ

समस्या	किसान	प्रतिशत
उपज का कम दाम	14	35%
बढ़ती लागत	11	27.5%
आवारा पशुओं से फ़सल हानि	8	20%
सिंचाई की कमी	4	10%
ऋण का बोझ	3	7.5%

तालिका : किसानों द्वारा बताई गई सबसे बड़ी समस्या (नमूना आँकड़े)

उपज का उचित दाम न मिलना सबसे बड़ी समस्या के रूप में सामने आया। आवारा पशुओं से फ़सल की रखवाली भी किसानों की बड़ी चिंता है।

7.5 प्रमुख निष्कर्ष

- गाँव के अधिकांश किसान सीमांत श्रेणी के हैं।
- भूजल पर निर्भरता अधिक है; सूक्ष्म सिंचाई अपनाने वाले बहुत कम हैं।
- किसान उत्पादक संगठन से जुड़ने में किसानों ने रुचि दिखाई।

8. केस अध्ययन

इस अध्याय में कुछ उदाहरण दिए गए हैं जिनसे पता चलता है कि छोटे प्रयास भी बड़ा बदलाव ला सकते हैं। सभी नाम और स्थान काल्पनिक हैं।

8.1 केस अध्ययन 1 : सब्जी खेती से बढ़ी आय

गाँव की किसान सुमन देवी (परिवर्तित नाम) के पास एक एकड़ से कम ज़मीन है। पहले वे केवल गेहूँ और धान उगाती थीं। स्वयं-सहायता समूह से ऋण लेकर उन्होंने आधे खेत में टपक सिंचाई के साथ सब्जियाँ उगानी शुरू कीं।

अब वे पास के क़स्बे की साप्ताहिक हाट में सीधे सब्जियाँ बेचती हैं। उनके अनुसार उनकी आय पहले से बेहतर हुई है और परिवार को पूरे वर्ष ताज़ी सब्जियाँ भी मिलती हैं।

सीख

छोटे खेत में भी फ़सल विविधीकरण और सीधी बिक्री से आय बढ़ाई जा सकती है।

8.2 केस अध्ययन 2 : किसान उत्पादक संगठन

पास के तीन गाँवों के 150 किसानों ने मिलकर एक उत्पादक संगठन बनाया। संगठन थोक में बीज और खाद खरीदता है, जिससे लागत घटी है। सरसों की उपज को संगठन मिलकर तेल मिल को बेचता है, जिससे किसानों को मंडी से बेहतर भाव मिलता है।

9. चित्र-संग्रह

परियोजना के दौरान लिए गए फोटो और बनाए गए चार्ट यहाँ लगाएँ। हर चित्र के नीचे उसका छोटा-सा परिचय लिखें।

फोटो लगाने का स्थान

चित्र 1 : किसानों से साक्षात्कार

फोटो लगाने का स्थान

चित्र 2 : गाँव का नलकूप और खेत

फोटो लगाने का स्थान

चित्र 3 : साप्ताहिक हाट में सब्जी बेचती किसान

फोटो लगाने का स्थान

चित्र 4 : कृषि विज्ञान केंद्र का प्रदर्शन खेत

10. सुझाव

अध्ययन के आधार पर हम निम्नलिखित सुझाव देना चाहते हैं :

- छोटे किसान उत्पादक संगठनों से जुड़कर सामूहिक खरीद और बिक्री करें।
- गाँव स्तर पर भंडारण और शीत-गृह की सुविधा विकसित हो।
- मृदा परीक्षण के आधार पर ही खाद का उपयोग हो।
- सूक्ष्म सिंचाई अपनाने के लिए प्रशिक्षण और सहायता गाँव तक पहुँचे।
- खेती के साथ पशुपालन, मधुमक्खी पालन जैसी सहायक गतिविधियाँ अपनाई जाएँ।

11. निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि भारतीय किसान परिश्रमी और नई चीजें सीखने को तैयार है, परंतु छोटी जोत, बढ़ती लागत और बाज़ार तक सीधी पहुँच न होना उसकी प्रगति में बाधक हैं।

यदि किसानों को सही तकनीक, संगठित बाज़ार और समय पर सहायता मिले, तो खेती घाटे का सौदा नहीं रहेगी। किसान समृद्ध होगा, तभी गाँव और देश समृद्ध होंगे।

12. संदर्भ सूची

6. भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास, कक्षा 11 — पाठ्यपुस्तक
7. समकालीन भारत, कक्षा 10 — अध्याय : कृषि
8. कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्रकाशित किसान पुस्तिकाएँ
9. ग्रामीण विकास विषयक हिंदी पत्रिकाओं के लेख

परिशिष्ट क : सर्वेक्षण प्रश्नावली

उत्तरदाता का नाम (वैकल्पिक) : _____ आयु : _____ व्यवसाय : _____

1. आपके पास कुल कितनी कृषि भूमि है?

☐ 1 हेक्टेयर से कम ☐ 1-2 हेक्टेयर ☐ 2-4 हेक्टेयर ☐ 4 से अधिक

2. सिंचाई का मुख्य साधन क्या है?

☐ नलकूप ☐ नहर ☐ किराये का पंप ☐ केवल वर्षा

3. आप उपज कहाँ बेचते हैं?

☐ मंडी ☐ व्यापारी ☐ सीधे ग्राहक ☐ सरकारी केंद्र

4. क्या आपने फ़सल बीमा कराया है?

☐ हाँ ☐ नहीं

5. आपकी सबसे बड़ी समस्या क्या है?
